मनोज
कॉमिक्स
संख्या 1014 मूल्य 7.00
वंडर गर्ल
राम-रहीम
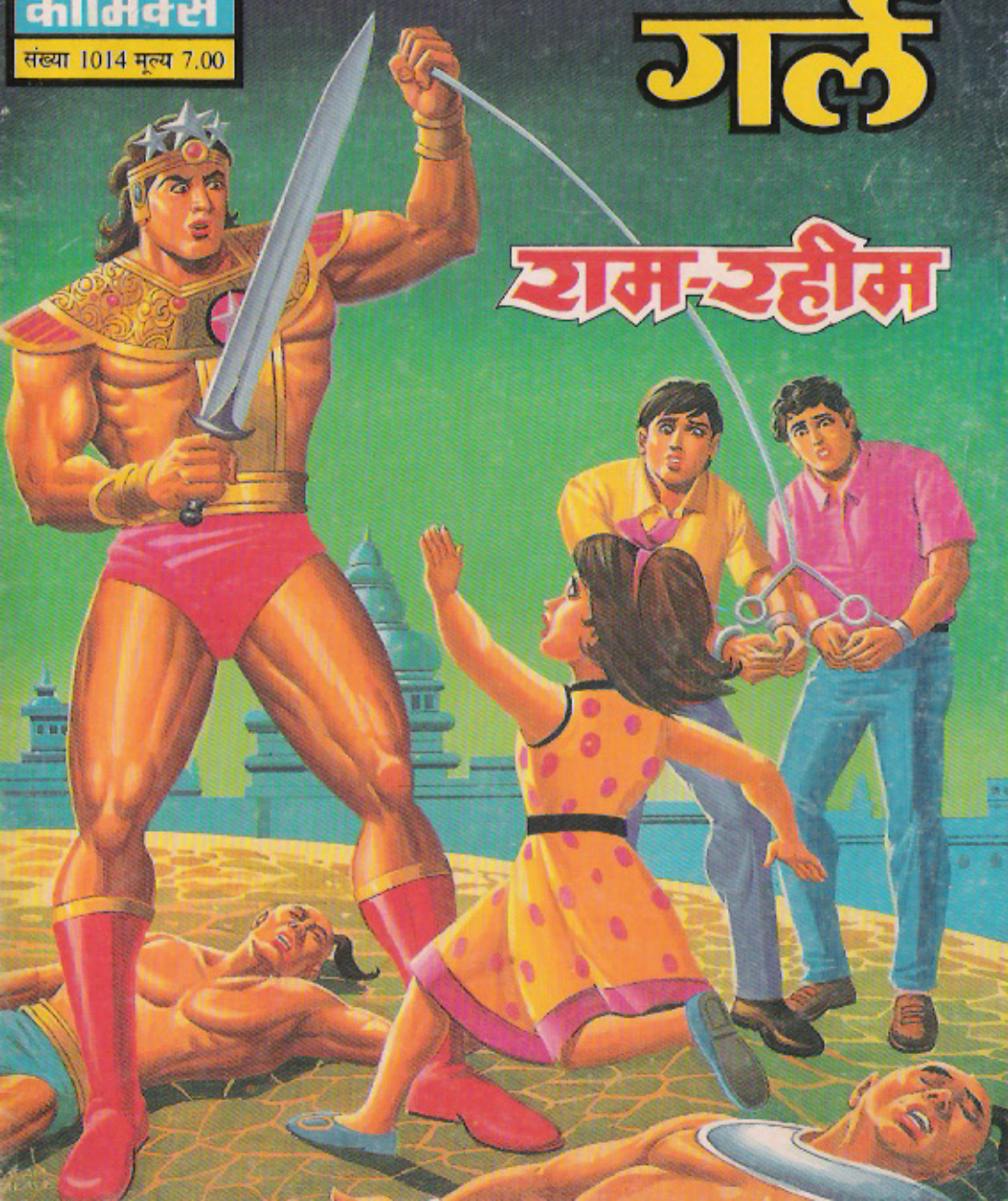
•रा•म•र•ही•म•सी•री•ज•
"वंडर गर्ल"
लेखक: महेन्द्र
चित्रांकन: दिलीप कदम, उमेश कानडे
गुरुदेव के कारण तुम्हें अपने हाथों से न मारने की कसम खा बैठा था मैं। किन्तु मेरी मां की आत्मा चीख-चीखकर मुझे धिक्कार रही है। उसका एक-एक शब्द मेरे कलेजे में नश्तर की भांति चुभ रहा है। तुम्हारी मौत के साथ ही अब मेरी मां की आत्मा शान्त होगी। मरना ही होगा तुम्हें।
नहीं! मेरे भैया को मत मारो! इन्हें माफ कर दो अंकल! अगर ये मर गये तो हम भी जिन्दा नहीं रहेंगे। हम भी अपनी जान दे देंगे।
प्रतिशोध की आग में झुलसता स्टारो अपने राजगुरु आर्गोस को दिया वचन भुलाकर एक बार फिर मौत बनकर आ खड़ा हुआ राम-रहीम के सिर पर। किन्तु किसकी है यह आवाज, जो राम-रहीम के प्राणों की भीख मांग रही है?

यह है राम-रहीम का घर-
मम्मी! मुझे भूख लगी है। जल्दी से खाना दो।
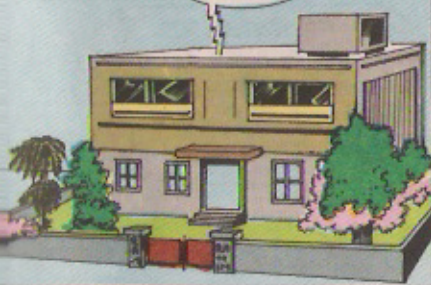
उफ! तुम बहुत परेशान करने लगी हो श्वेता! जरा दो मिनट तो इन्तजार करो।
नहीं! मुझे अभी खाना चाहिये!
जी हां! यह है दस वर्षीय नटखट श्वेता। विजय की बेटी। इसके बारे में जानने के लिये पढ़ें राम-रहीम का यादगार कॉमिक्स विशेषांक 'दिव्यशक्ति का बेटा'

ओ.के.बाबा! मैं अभी खाना लगाती हूं।
जब तक मम्मी खाना लगाये, क्यों न राम भइया के कमरे में घुस जाऊं। मम्मी मुझे चारों ओर ढूंढकर परेशान हो जायेगी। बड़ा मजा आयेगा! ही...ही...ही...

कुछ ही पलों में श्वेता राम के कमरे में रखी इस अलमारी में प्रवेश कर रही थी।
ही...ही...ही... यह अलमारी ठीक रहेगी।

इधर कमरा खाली पा चौंक उठीं मिसेस राघव-
उफ! अब कहां चली गयी यह शरीर लड़की! बहुत परेशान करती है।

श्वेता, कहां हो तुम? देखो खाना ठंडा हो रहा है।

श्वेता! कहां हो तुम?
ही...ही...ही... बहुत परेशान कर लिया मम्मी को। अब बाहर निकलना चाहिए!

लेकिन यह क्या?
उफ! यह अलमारी खुल क्यों नहीं रही? क्या हो गया है इसमें? कैसे खोलूं इसे?
धाड़-धाड़ धड़क उठा था श्वेता का नन्हा सा दिल।

इसी पल अलमारी में चमकी तीव्र प्रकाश किरण–
ओह! यह क्या है?
हैरान न हो बेटी मैं "पावर" हूं मुझे हाथ में ले लो।
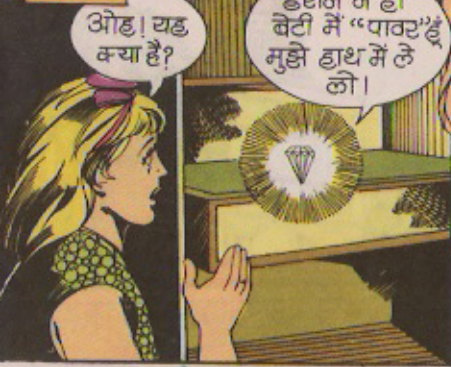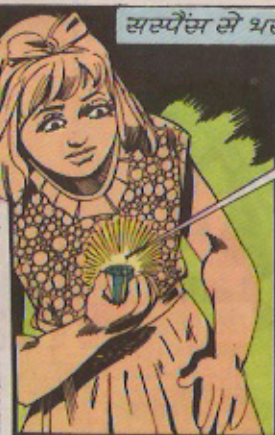
सस्पेंस से भरी श्वेता ने उठा लिया वह हीरा।
शाबाश बेटी! अब मुझे अपने मुंह में रख लो!

आदेश का पालन हुआ।

अगले ही पल मानो चमत्कार-सा हुआ। दिव्य आभा से चमक उठा श्वेता का शरीर।
श्वेता! मैं तुम्हारे शरीर में समा चुका हूं। जैसे ही तुम POWER बोलोगी। तुम्हारा शरीर अनेक शक्तियों से जागृत हो जायेगा। और जब दोबारा पॉवर बोलोगी तो सामान्य स्थिति में आ जाओगी। बोलो POWER!
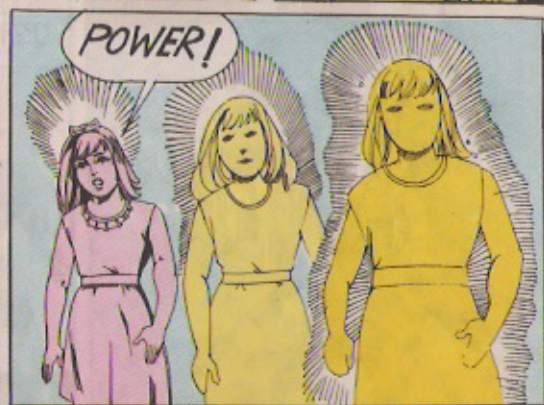
POWER!
तेजी से एक प्रकाश-पुंज में बदलती चली गई थी श्वेता।

अगले ही क्षण अलमारी से बाहर निकली वह।
आहा! मैं बिना अलमारी खोले ही बाहर आ गयी। यह सब कैसा चमत्कार है!
श्वेता!

मिसेज राघव की आवाज सुनकर फिर से सामान्य हो गई थी श्वेता।
शैतान! मैं तुझे पूरे घर में खोज-खोजकर परेशान हो गयी। और तू यहां छिपी बैठी है। ठहर, मैं अभी मजा चखाती हूं तुझे।
मैं यहां हूं मम्मी!

स... सॉरी मम्मी! मुझे बहुत तेज भूख लगी है। प्लीज, खाना दो ना?
पगली! तुझे अपनी आंखों से एक पल के लिये भी ओझल होते नहीं देख सकती मैं।
रोटी के इस कौर में मिली थी ढेर सारी मां की ममता।

राजनगर की शान है यह रेनबो पैलेस। जहां लगी है दुनिया के बेशकीमती हीरे कोहिनूर की प्रदर्शनी।

किन्तु इस प्रदर्शनी में खलल डालने आ पहुंचा था कोई।
कड़ाक
कड़ड़ाक
फर्श में पड़ती ये गहरी दरारें किसी अशुभ घटना का सूचक थीं।

अगले ही पल फर्श फाड़कर भूत की तरह बाहर निकले -
पपलू
रम्मी
हा... हा... हा... इस हीरे पर अब हमारा अधिकार होगा।

इसी पल हवा में सरसराता-सा आया रहीम--

हीरे की रक्षा का भार हमारे कन्धों पर है कमीनो! छू भी न पाओगे तुम उसे।

आSSS

रम्मी को संभाला राम ने।

मुझे पहले ही ऐसी किसी अप्रत्याशित घटना की आशंका थी। इसलिए हीरे की सुरक्षा हम स्वयं कर रहे थे।

धड़ाक

भगदड़ का गुबार-सा उठा हॉल में।

भागो!

भागो!

आह

कुछ ही पलों में हॉल मे बचे थे चार शख्स। खूंखार... खतरनाक... जंग के आदी।

एक दूसरे को तोलती निगाहें।

अगले ही पल लहराया पपल--

हा...हा...हा... यह हीरा तो हम लेकर ही जायेंगे।

बला की फुर्ती से बचा था रहीम।

पपलू को चकरी की भांति घुमाकर रख दिया था रहीम के हाथ ने।

इसी पल रम्मी के हाथों से निकली किरणों ने दिखाया अपना अनोखा कमाल–

ओह! हमारे पैर जमीन में धंस गये हैं।

भयानक ढंग से आगे बढ़े पपलू और रम्मी–

हा...हा...हा... अब हमारे हाथों से निकलने वाली अर्थब्रिक किरणें तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े करके रख देंगी।

उफ! मेरा हाथ भी मुझे जमीन से निकाल नहीं पा रहा है। अब क्या होगा?

रहस्यों के तारे बिखेरता अपना काम पूरा कर वापस लौट गया प्रकाश पुंज!
जूंsss

सस्पैंस का सागर लहरा रहा था राम-रहीम के चेहरों पर!
यह प्रकाश-पुंज कैसा था राम?
पता नहीं! न जाने कहां से आया था यह?

इधर रेनबो पैलेस से कहीं दूर किसी की दहाड़ से थर्रा उठी यह आलीशान इमारत-
नहींsss यह नहीं हो सकता। वे दोनों नहीं मर सकते!
ऐसा ही हुआ है महामहिम! पपलू और रम्मी मारे जा चुके हैं। कोहिनूर हीरा हमारे हाथ आते-आते रह गया।

भूकम्प का-सा जलजला था भूकम्पराज के चेहरे पर-
पपलू और रम्मी को मारकर भूकम्पराज को खुली चुनौती दी है उन लड़कों ने। अब उन्हें मरने से कोई नहीं बचा सकता।
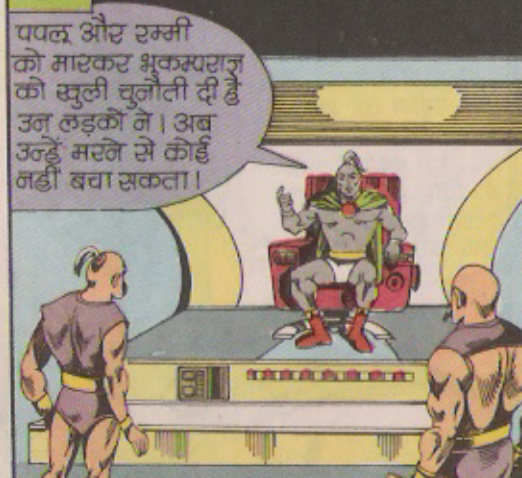
इस जंग में मैं भी तुम्हारे साथ हूं भूकम्पराज। उन लड़कों की लाशें देखने को तरस गयी हैं ये आंखें।
क...कौन?

जवाब में स्टारो ने सुनायी भूकम्पराज को सारी कहानी।

मेरी मां अन्न-जल त्यागे बैठी है भूकम्पराज! राम-रहीम की लाशें देखने के बाद ही अन्न-जल ग्रहण करेगी वह।

राम-रहीम की लाशों के बदले तुम्हें मिलेगी ढेर सारी दौलत!

मुझे तुम्हारी दोस्ती स्वीकार है स्टारो! और इस दोस्ती का पहला उपहार राम-रहीम की लाशों के रूप में दूंगा मैं तुम्हें।

भूकम्पराज की आंखों में स्पष्ट झलक रहा था ढेर सारा लालच!

राजनगर की शान है "FILM CITY"
मायावी संसार
ग्लैमरस सिटी
हर समय असंख्य फिल्मी सितारों की भीड़ लगी रहती है यहां।

किन्तु आज यहां मंडरा रहा था एक खतरा।
हा...हा...हा... ब्रेकर के हाथों तबाह होकर रह जायेगा पूरा शहर! कोहिनूर नहीं तो कुछ नहीं!
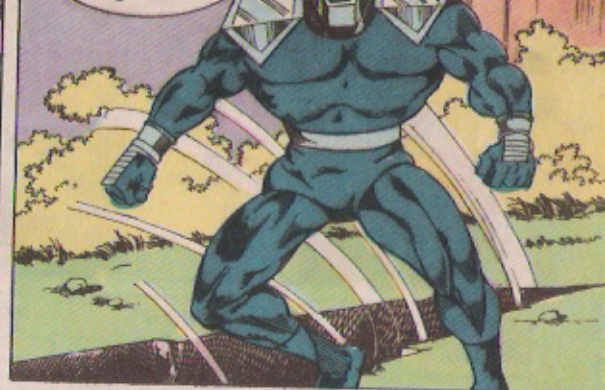
ब्रेकर के हाथों से निकली किरणें जा टकरायीं इस आलीशान इमारत से।

ताश के पत्तों की भांति ढह गई इमारत-
धड़ाम
कड़ाक
हा... हा... हा... अब तुम्हारी बारी है।
देश के नम्बर वन हीरो-हीरोइन की जान खतरे में थी।

चौंक पड़े थे राम-रहीम यह खबर सुनकर।
ओह नो! हम फौरन फिल्म सिटी पहुंच रहे हैं।

सुपर शक्तियों के स्वामी राम-रहीम के लिए कहीं भी पहुंचना कुछ पलों का काम था।

इधर ब्रेकर के हाथों ने उगलीं किरणें।

हा...हा...हा... अब तुम्हारे परखच्चे उड़ेंगे।

इससे पहले कि ब्रेकर के इरादे कामयाब होते, ढाल बनकर आ गये दोनों जांबाज।

धड़ाम!

बस शैतान! बहुत हो चुका तेरा खूनी खेल। अब राम के हाथों नहीं बचेगा तू।
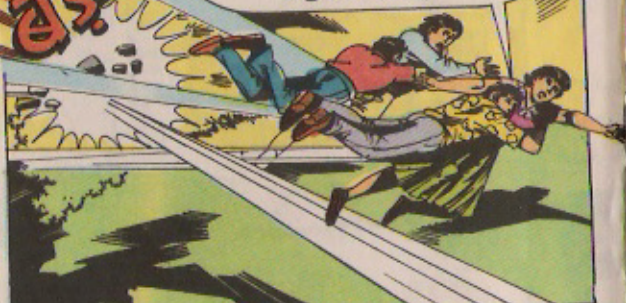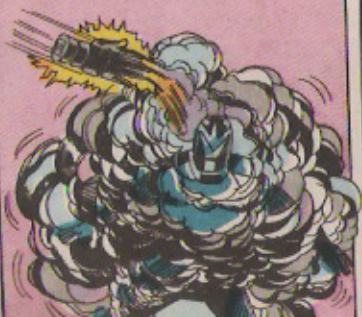
हा... हा... हा... तुम मेरे जाल में फंस गये हो कमीनो! कुछ ही पलों में सारा विश्व सुनेगा तुम्हारी मौत का समाचार!

किन्तु, महामहिम! इनकी मौत से ही हमारी समस्या नहीं सुलझेगी। हमें उस प्रकाश-पुंज का रहस्य भी जानना है, जिसके स्पर्श-मात्र से ही पपलू और रम्मी मारे गये थे।

हम जानते हैं खुरन्ट। उस प्रकाश-पुंज का रहस्य भी राम-रहीम की मौत के साथ खुल जायेगा।

फिलहाल तो हमें इंतजार है उस हीरे का, जिसे हमारे साथी प्राप्त करने गए हुए हैं। हा... हा... हा...

भूकम्पराज के अट्टहास में था गजब का घमण्ड, अभिमान और थोड़ी-सी मूर्खता।

राम-रहीम का घर।

तूफान का झोंका बनकर प्रविष्ट हुए थे वह नकाबपोश वहां।

कौन हो तुम?

चौंक उठी मिसेज राघव...

...किन्तु, एक पल के लिए। दूसरे पल बेहोश हो चुकी थी वह-

ठक

आह!

पूरी निश्चिंतता से घर खंगालने में जुट गये चारों नकाबपोश।
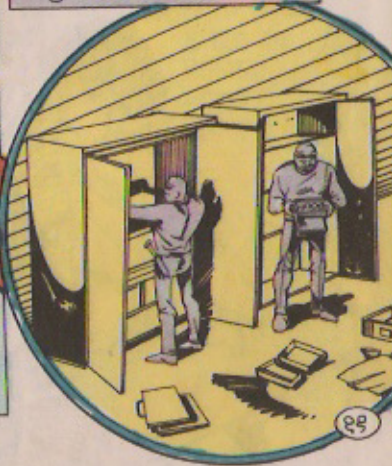
तलाश था।

उफ! पूरा घर छान मारा। न जाने कहां छुपा है वह हीरा?

इस बुढ़िया को उठा ले चलो! इसे बचाने के लिए वह स्वयं ही हीरा हमारे हवाले कर देंगे।

से बेखबर कि कोई कहीं छुपा उन्हें देख रहा था।

ओह! वह लोग मम्मी को ले जा रहे हैं।

अगले पल बोलकर एक नाम प्रकाश-पुंज में बदलती चली गई ख्वेला।

POWER!
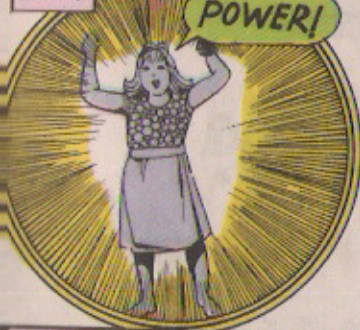
ब्रेकर के मुंह से निकली हृदयविदारक चीख-

आह!

बोल कमीने। कहां है तेरे बॉस भूकम्पराज का अड्डा?

यह ऐसे नहीं बतायेगा। इससे अब मेरा नकली हाथ निबटेगा।

किन्तु इससे पहले कि रहीम कुछ कर पाता, भट्टी की भांति दहकने लगा ब्रेकर।

ओह! यह कैसा परिवर्तन हो रहा है इसमें?

अगले ही पल कमरे में लहराया प्रकाश-पुंज।
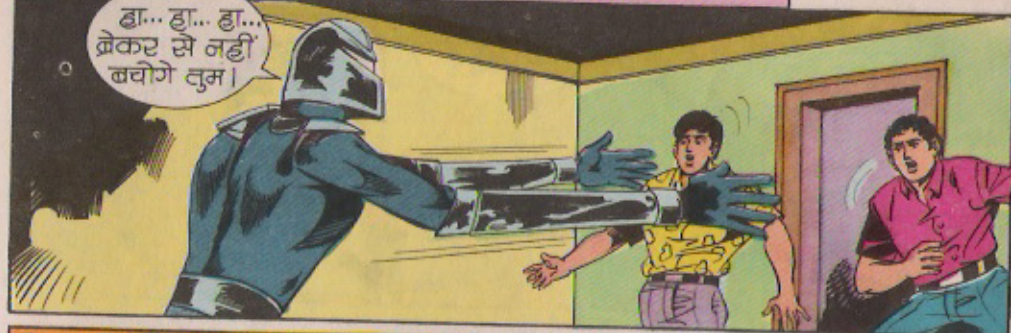
खचाक

आह!

खचाक

कक्ष में गूंजी लहू जमा देने वाली आवाज।

भागो राम-रहीम! ब्रेकर फटने वाला है!

प्रकाश-पुंज के पीछे ही लपके थे राम-रहीम।
कौन है हमारा अज्ञात मददगार?
कहां से आता है यह?
पल-प्रतिपल दहकता जा रहा था ब्रेकर।

अगले ही पल ज्वालामुखी-सा फट पड़ा वह।
ब्रूम

झनझनाकर रह गये राम-रहीम के मस्तिष्क।
उफ! हमें मारने का इतना जबर्दस्त प्लान! अगर वह अज्ञात मददगार न होता तो ब्रेकर के साथ-साथ हमारे भी परखच्चे उड़ जाते।
किन्तु वह अज्ञात मददगार है कौन?

पागलों की भांति निहार रहे थे राम-रहीम अपने घर की उजड़ी हुई हालत को।

राम भइया! यह सब क्या है?

मेरा तो दिल डूबा जा रहा है रहीम! तुम मां और श्वेता को ढूंढो! मैं राजगुरु आर्गोस का हीरा देखता हूं।

गधे के सिर से सींग की तरह नदारद था राजगुरु आर्गोस का हीरा।

उफ! किसी ने चुरा लिया वह हीरा! राजगुरु आर्गोस का हीरा चोरी चला गया!

होश में आकर सबकुछ बताती चली गई श्वेता।

वह चार आदमी थे भइया, नकाब लगाए हुए। उन्होंने मुझे मारा और मम्मी को उठाकर ले गए।

इसका मतलब, हीरा भी वही लोग ले गए हैं!

किन्तु, उन्हें हीरे के विषय में पता कैसे चला?

केस उलझता जा रहा है, रहीम। अब हमें चीफ अंकल से मदद लेनी होगी।

या अल्लाह! अम्मीजान की हिफाजत करना।

काश! दोनों एक बार पीछे मुड़कर श्वेता की तरफ देख लेते!

बेहोशी का अच्छा नाटक किया मैंने। वरना इन्हें शक हो जाता मुझ पर।

POWER!

आपके वचन ने ही स्टारो के पांवों में बेड़ियां डाल रखी हैं, अन्यथा भूकम्पराज से सौदा करने की बजाए स्टारो खुद उन लड़कों की लाशें अपनी मां के कदमों में डाल देता!

ठीक है, स्टारो! इस समय शायद तुम हमारी बातों को नहीं समझ पाओगे। पर याद रखना, इस दुनिया में वही होता है, जो विधाता ने लिख रखा है। उसके लिखे को कोई नहीं बदल सकता, कोई नहीं।

अब जान से पहले तुम्हारे गुरु होने के नाते हम चाहते हैं...

उस भूल को सुधारो, जिसे तुम अनजाने में कर आए हो।

कैसी भूल राजगुरु?

दुष्ट भूकम्पराज को हमारे पवित्र हीरे के बारे में बताने की भूल। वह दुष्ट उसे प्राप्त कर पूरी पृथ्वी पर तबाही मचाना चाहता है।

स्टारो के जीवित रहते ऐसा नहीं होगा राजगुरु। मैं उसे वह हीरा कदापि हासिल नहीं करने दूंगा।

हीरे की चिंता तुम मत करो स्टारो। वह वहां पहुंच चुका है, जहां उसे पहुंचना चाहिए था। भूकम्पराज उसे कदापि प्राप्त नहीं कर पाएगा।

तुम्हें तो बस राम-रहीम की मां को भूकम्पराज के चंगुल से आजाद करवाना है, जिसे वह दुष्ट हीरा प्राप्त करने की नीयत से उठा लाया है।

ऐसा ही होगा राजगुरु! मां चाहे दुश्मन की ही क्यों न हो, स्टारो के लिये पूजनीय है। यकीन रखिए, उन्हें कोई कष्ट नहीं होगा।

बुलबुलों में बदलता चला गया स्टारो।

हां भूकम्पराज! मैंने तुमसे राम-रहीम की लाशों का सौदा किया था, हीरे का नहीं।
केवल उतना ही करो भूकम्पराज, जितना स्टारो चाहता है। अन्यथा कहीं ऐसा न हो कि मेरे कहर की बिजलियां तुम्हारी इस पाप की नगरी को जलाकर राख कर दें।
स..समझ गया स्टारो!

तो फिर मैं इन्हें अपने साथ ले जाऊं?
हां-हां! क्यों नहीं स्टारो!

गुड! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।

आओ मां, चलो!
अजीब था स्टारो। जिसे मां कह रहा था, उसी के जिगर के टुकड़ों के लहू से होली खेलना चाहता था।

इधर अपने खिलाफ बुने जा रहे मौत के जाल से बेखबर राम-रहीम—
चिंता मत करो राम! हमारे सारे जासूस मिसेज़ राघव की तलाश में लगे हैं। शीघ्र ही कोई न कोई सुराग हाथ लग जाएगा।

बातचीत को लगाम दी टेलीफोन की घनघनाहट ने—
ट्रिन ट्रिन
हैलो, राम स्पीकिंग!

उधर से जो कुछ सुनाई दिया, वह राम के छक्के छुड़ा देने के लिए काफी था।
क्या हुआ राम?किसका फोन है?
???
धाड़-धाड़ बज उठा था सबका दिल।
मानो विस्फोट-सा किया राम ने-
मां का फोन था। वह घर लौट आयी है। उन्हें भूकम्पराज के कब्जे से स्टारो बचाकर लाया है।
क्या?
भक्क से उड़ गए सबके दिमाग!
तभी दौड़ते हुए कक्ष में प्रवेश किया चीफ मुखर्जी के सेक्रेटरी थापा ने-
सर! भूकम्पराज का पता लग गया है। उसका हैडक्वा-टर डेमन वैली में है।
बिजली के से तीव्र झटके से उठ खड़े हुए दोनों।
हमें फौरन डेमन वैली पहुंचना होगा।
अब भूकम्पराज हमारे हाथ से नहीं बचेगा।
एक जोड़ी आंखें देख रही थीं उन्हें जाते हुए।
यह है डेमन वैली-
उस इमारत तक पहुंचना है हमें। वही हमारी मंजिल है।
यह रोप वे ट्राली पहुंचायेगी हमें हमारी मंजिल तक।

रोप वे ट्राली में सवार चल पड़े दोनों।
इसी पल ट्राली से छूट पड़ीं ढेर सारी चिंगारियां।
ओह! हमला! अब जरूरत है शैडो पावर की।
बिजली की सी फुर्ती से ट्राली से कूदे दोनों–
धड़ाम
बचो रहीम।
किसने किया यह हमला!!!
अपने प्रश्न का जवाब उन्हें मिला तब...
...जब घाटी में लहराते चले आये अल्फा प्लस व अल्फा माइनस।
हा...हा...हा... यह हमला हमने किया है लड़कों!
अल्फा प्लस से नहीं बचेगा तू राम!
और अल्फा माइनस टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा रहीम के।
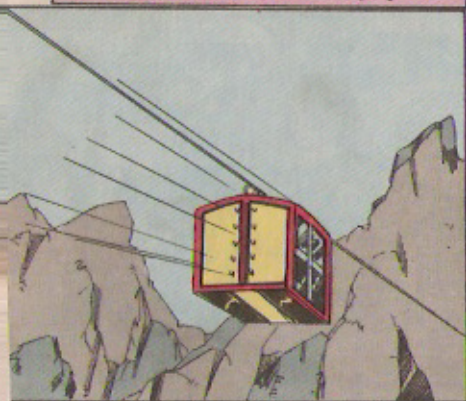
पलटकर किया रहीम ने प्रहार-
हा...हा...हा... तेरी गोलियां मुझ पर असर नहीं डाल सकेंगी।
तड़...तड़... तड़
हैरानगी-सी छायी थी राम के चेहरे पर भी।
उफ! इस कमीने पर कोई असर नहीं डाल पा रहे हैं मेरे घातक प्रहार!
राम-रहीम पर भारी पड़ते चले गये दोनों शैतान-
आह! क्या आज सचमुच हमारी मौत निश्चित है।
क्या यहां भी हमें बचाने आयेगा हमारा अज्ञात मदद-गार?
मददगार तो सचमुच आ चुका था वहां-
जूंऽऽऽ
प्रकाश-पुंज से निकली किरणों ने स्वतंत्र कर दिया राम-रहीम को।
अगले पल प्रकाश-पुंज से गूंज पड़ा लहू जमा देने वाला स्वर-
इन दोनों को आपस में टकरा दो राम। ये स्वयं ही नष्ट हो जायेंगे।

आज्ञा का पालन हुआ-
अब समझा अल्फा प्लस व अल्फा माइनस का चक्कर! बिजली के दो तारों की तरह हैं ये। जिनके आपस में टकराते ही शॉर्ट सर्किट हो जायेगा इनमें।
आह!
राम के प्रलयंकारी घूंसे ने अल्फा माइनस पर उछाल डाला था अल्फा प्लस को।
एक कर्णभेदी विस्फोट-
बड़ाम
न जाने कितने टुकड़ों में बदले थे दोनों शैतान।
इसी पल हवा में लहराता नजर आया खुर्शिद!
हमारी अल्फा फोर्स को मारकर ज्यादा खुश मत हो राम! लाशें तो अब भी बिछ-कर रहेंगी तुम्हारी।
रेट...रेट...रेट
तो यह है असली मुजरिम!
पागल सांड की भांति टूट पड़ा था राम खुर्शिद पर-
कोहिनूर हीरा चाहिये था ना तुझे! अब उल्टा राम के हाथों मिलेगी तुझे मौत!
आह!
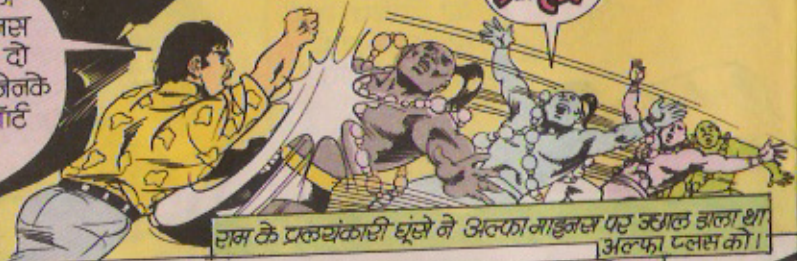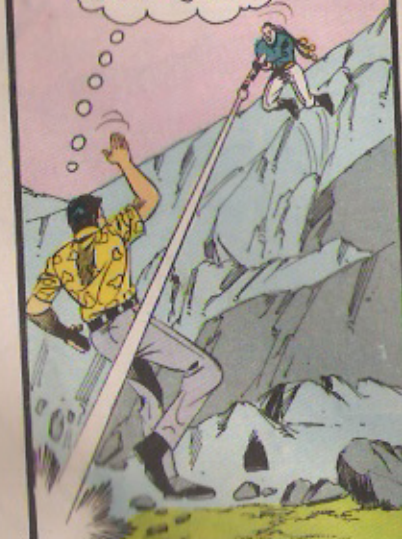
जमीन छूने से पहले ही छलावे की भांति राम की तरफ उछला खुरन्ट।
खुरन्ट को इतना कमजोर न समझना राम!
खुरन्ट तो बस खुरन्ट है।
आSSS
राम के चेहरे से खून बहता देख पागल हो उठा रहीम।
खुरन्ट! तूने राम भैया पर हाथ उठाया! मैं तेरे चीथड़े-चीथड़े उड़ा दूंगा।
आSSS
छलनी कर दिया था गोलियों ने खुरन्ट का
खुरन्ट इतनी आसानी से पराजित नहीं हो सकता। जरुर कुछ गड़बड़...
और जब तक राम-रहीम समझ
...बहुत देर हो चुकी थी।
उफ! किसने फेंका यह जाल?
हा...हा...हा... अब फंसे हो तुम भूकम्पराज की कैद में।
अगले ही पल जाल में फंसे आकाश में उठते गये दोनों-
हम गहरी चाल में फंस गये हैं राम!
कहां गया हमारा अज्ञात मददगार?

अंकोल ग्रह...
...स्टारो की जन्मभूमि...
...जहां छाया था आज मनहूस सन्नाटा।
क्या बात है वाशो? तुम्हारा चेहरा मुर्झाया हुआ क्यों है?
सिर झुकाए मायूस-सा खड़ा था वाशो।
आखिर सब्र का बांध टूट गया। क्रोध से दहाड़ उठा स्टारो-
तुम बोलते क्यों नहीं वाशो? तुम्हारी चुप्पी मेरे दिल को चीरे जा रही है। भगवान के लिए कुछ तो बोलो वाशो!
म... महारानी...!
मानो समूचा ब्रह्माण्ड घूमता महसूस हुआ स्टारो को।
क्या हुआ मां को... क्या हुआ?
लगता है तूने कुछ न बोलने की सौगन्ध खा रखी है। मैं खुद जाकर देखता हूं!
तूफान की तरह प्रविष्ट हुआ वह महारानी फ्लोरिडा के कक्ष में।
मां... मां...!

मानो ब्रह्माण्ड में विचरण करता हर ग्रह अपनी जगह ठहर गया था। मानो एक पल के लिए सबकुछ शांत हो गया था। वातावरण में गूंजी थी सिर्फ स्टारो की कर्णभेदी चीख।

नहींऽऽऽ

अपनी मां के मृतक जिस्म से किसी बच्चे की भांति लिपट पड़ा था वह पगला।

तुम अपने स्टारो को इस तरह छोड़कर नहीं जा सकती मां! तुम्हारे बिना मर जायेगा स्टारो।

आंखों में आग लिए उठ खड़ा हुआ स्टारो।

तेरे प्रण को मैं पूरा करूंगा मां! राजगुरू को दिया वचन तोड़कर मैं स्वयं राम-रहीम से टकराऊंगा। आग बरसेगी अब पृथ्वी पर।

अगले ही पल हवा के बुलबुलों में बदलता चला गया स्टारो।
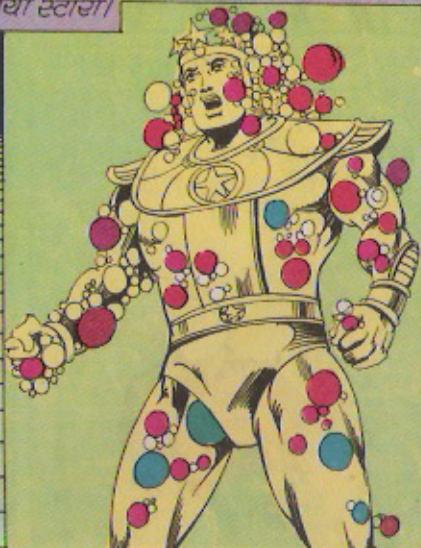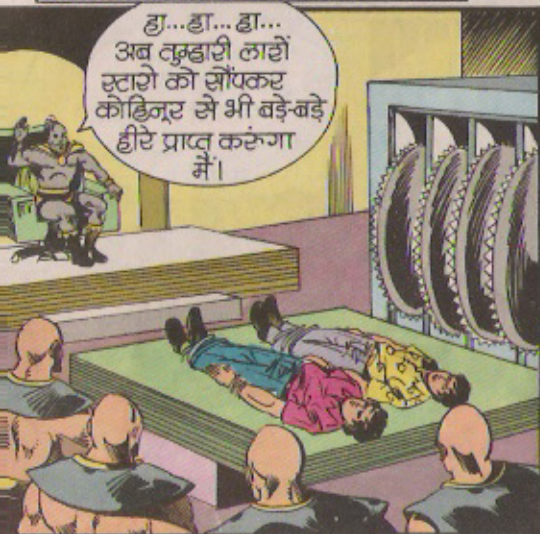
हैरानी से खुले रह गए राम-रहीम के मुंह-

यह क्या हुआ राम भइया? मौत हमारी ओर आते-आते दुश्मनों की ओर कैसे मुड़ गई?

इसी पल वातावरण में गूंजी एक तेज चीख ने खून जमाकर रख दिया दोनों का।
मददगार नहीं, तुम्हारी मौत हूं मैं कमीनो!
स्टारो!
बड़े ही प्रलयंकारी अंदाज में सामने आया स्टारो।
तुम्हें मौत देने को तड़प रही है मेरी आत्मा।
तुम्हारी मौत के साथ ही ठंडी होगी मेरे सीने में धधकती आग।
आईsss
आह!
कहर बनकर टूट पड़ा था स्टारो राम-रहीम पर।
मौत के अत्यधिक निकट थे अब राम-रहीम।
स्टारो के हाथ से निकली किरणों में जकड़कर रह गए...
...राम-रहीम!
२८
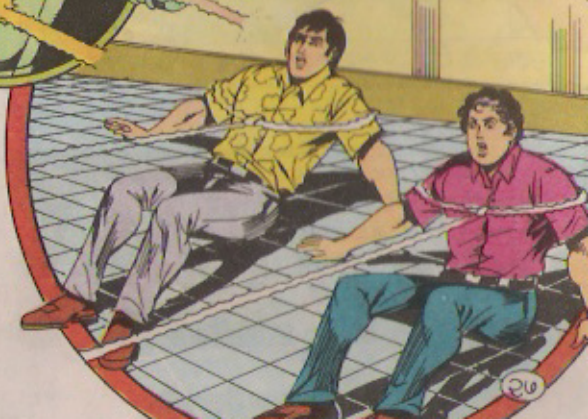
इधर श्वेता की मासूम आवाज ने झनझनाकर रख दिया स्टारो का मस्तिष्क।

उसे याद आयी अपनी बहन पैलोबी की जलती हुई चिता। भूख से तड़प-कर दम तोड़ती अपनी मां। तबाह हुआ अंकोल ग्रह।

एक-एक करके सारी घटनाएं उसके मस्तिष्क में चलचित्र की भांति घूम गईं।

अगले ही पल उसके हाथों से निकली किरणों ने राम-रहीम को आज़ाद कर डाला।
थैंक्यू, स्टारो अंकल!
मैं हार गया राम! एक मासूम की मासूमियत ने स्टारो को पराजित कर दिया। मुझे श्वेता के अंदर अपनी बहन मेलोडी नज़र आयी। अपनी बहन का आदेश भला कैसे टाल सकता था मैं?
क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे राम-रहीम!
अपनी बांहों में भींच लिया राम ने उसे।
मैंने तुम्हें कभी दुश्मन नहीं समझा स्टारो! मेरी आंखों से बहते ये आंसू हमारी दोस्ती का सबूत दे रहे हैं।
हर किसी की आंखों में थे थोड़ी खुशी और थोड़े गम के आंसू।
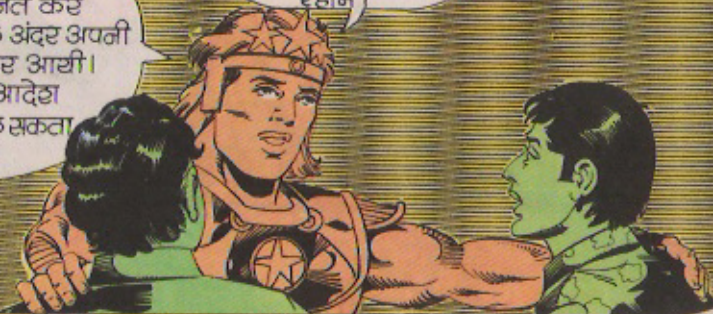
अगले ही पल हवा के बुलबुलों में बदलता चला गया स्तारो।
जब भी मेरी जरूरत हो, मुझे अवश्य याद करना राम-रहीम!
तुम्हारी याद हमेशा आयेगी स्तारो!
और कुछ समय पश्चात घर पर-
मेरी चॉकलेट्स कहां हैं भइया?
अरे बाप रे! वह तो हम लाना ही भूल गये।
आज माफ कर दो। कल ले आएंगे।
ठीक है, कर दिया माफ! आप भी क्या याद करोगे कि किसी रईस से पाला पड़ा था।
समाप्त